अध्याय 8: बड़े भाई साहब

विषय-सूची

9 प्रश्नावली · 26 प्रश्न

प्रश्नावली 8.1	मौखिक — एक-दो पंक्तियों में उत्तर	5 प्रश्न
प्रश्नावली 8.2	लिखित (क) — 25-30 शब्दों में उत्तर	5 प्रश्न
प्रश्नावली 8.3	लिखित (ख) — 50-60 शब्दों में उत्तर	7 प्रश्न
प्रश्नावली 8.4	लिखित (ग) — आशय स्पष्ट कीजिए	4 प्रश्न
प्रश्नावली 8.5	भाषा अध्ययन — पर्यायवाची शब्द	1 प्रश्न
प्रश्नावली 8.6	भाषा अध्ययन — मुहावरों का वाक्य-प्रयोग	1 प्रश्न
प्रश्नावली 8.7	भाषा अध्ययन — तत्सम/तद्भव/देशज/आगत शब्द वर्गीकरण	1 प्रश्न
प्रश्नावली 8.8	भाषा अध्ययन — सकर्मक और अकर्मक क्रिया	1 प्रश्न
प्रश्नावली 8.9	भाषा अध्ययन — 'इक' प्रत्यय	1 प्रश्न

प्रश्नावली 8.1 — मौखिक — एक-दो पंक्तियों में उत्तर

प्रश्न 1

कथा नायक की रुचि किन कार्यों में थी?

हल

कथा नायक (छोटा भाई) की रुचि खेल-कूद और मनोरंजन के कार्यों में थी।
वह कंकरियाँ उछालना, कागज की तितलियाँ उड़ाना, चारदीवारी पर चढ़ना-कूदना, फाटक पर सवार होना, गुल्ली-डंडा खेलना और कनकौए (पतंग) उड़ाना पसंद करता था।
मौका पाते ही वह होस्टल से निकलकर मैदान में आ जाता था।

उत्तर: कथा नायक की रुचि खेलकूद — कंकरियाँ उछालना, तितलियाँ उड़ाना, गुल्ली-डंडा और कनकौए उड़ाने में थी।

प्रश्न 2

बड़े भाई साहब छोटे भाई से हर समय पहला सवाल क्या पूछते थे?

हल

बड़े भाई साहब का पहला सवाल हमेशा यही होता था — 'कहाँ थे?'
यह सवाल हमेशा उसी ध्वनि में पूछा जाता था।
जब भी छोटा भाई बाहर से लौटकर कमरे में आता, भाई साहब का यह रुद्र-रूप और यही पहला प्रश्न उसका स्वागत करता था।

उत्तर: बड़े भाई साहब छोटे भाई से हर बार पहला सवाल पूछते थे — 'कहाँ थे?'

प्रश्न 3

दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

हल

दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई की स्वच्छंदता बढ़ गई।
उसे यह धारणा हो गई कि वह पढ़े या न पढ़े, उसकी तकदीर बलवान है, इसलिए वह पास हो ही जाएगा।
भाई साहब के डर से जो थोड़ी-बहुत पढ़ाई करता था, वह भी बंद हो गई।
उसे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया और सारा समय पतंगबाजी में बीतने लगा।
उसने भाई साहब की सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाना शुरू कर दिया।

उत्तर: दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई की स्वच्छंदता बढ़ी; उसने पढ़ाई छोड़ दी और पतंगबाजी में सारा समय लगाने लगा।

प्रश्न 4

बड़े भाई साहब छोटे भाई से उम्र में कितने बड़े थे और वे कौन-सी कक्षा में पढ़ते थे?

हल

बड़े भाई साहब छोटे भाई से उम्र में पाँच साल बड़े थे।
कहानी के आरंभ में बड़े भाई साहब नौवीं जमात (कक्षा नौ) में पढ़ते थे और छोटा भाई पाँचवीं जमात में।
बड़े भाई साहब केवल तीन दरजे आगे थे (कक्षा में पाँच साल की उम्र का अंतर होते हुए भी, क्योंकि वे हर साल नहीं बढ़ते थे)।

उत्तर: बड़े भाई साहब छोटे भाई से उम्र में पाँच साल बड़े थे और कहानी के आरंभ में नौवीं जमात में पढ़ते थे।

प्रश्न 5

बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे?

हल

बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए कॉपी पर और किताब के हाशियों पर चिड़ियों, कुत्तों, बिल्लियों की तसवीरें बनाया करते थे।
कभी-कभी एक ही नाम या शब्द या वाक्य दस-बीस बार लिख डालते।
कभी एक शेर को बार-बार सुंदर अक्षरों में नकल करते।
कभी ऐसी शब्द-रचना करते जिसमें न कोई अर्थ होता और न कोई सामंजस्य।

उत्तर: बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए हाशियों पर तसवीरें बनाते, शब्द या शेर बार-बार लिखते और निरर्थक शब्द-रचनाएँ करते थे।

प्रश्नावली 8.2 — लिखित (क) — 25-30 शब्दों में उत्तर

प्रश्न 1

छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबिल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?

हल

टाइम-टेबिल बनाते समय छोटे भाई ने सोचा कि बिना पहले से नक्शा बनाए और स्कीम तैयार किए काम शुरू नहीं करना चाहिए।
उसने प्रातःकाल 6 बजे से रात 11 बजे तक हर विषय को निश्चित समय देते हुए एक सख्त टाइम-टेबिल बनाया।
खेलकूद की मद बिलकुल उड़ा दी।
परंतु उसका पालन नहीं हो सका क्योंकि मैदान की सुखद हरियाली, हवा के झोंके और खेलों का आकर्षण उसे अनिवार्य रूप से खींच ले जाता था।
वहाँ जाते ही वह सब कुछ भूल जाता था और भाई साहब को उसे डाँटने-फटकारने का अवसर मिल जाता था।

उत्तर: छोटे भाई ने सुनियोजित टाइम-टेबिल बनाया पर मैदान की हरियाली और खेलों का आकर्षण उसे बार-बार खींच ले जाता था, इसलिए वह उसका पालन नहीं कर पाया।

प्रश्न 2

एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई?

हल

जिस दिन छोटे भाई ने भोर का सारा समय गुल्ली-डंडे की भेंट किया और ठीक भोजन के समय लौटा, उस दिन भाई साहब ने मानो तलवार खींच ली और उस पर टूट पड़े।
उन्होंने कहा — 'देखता हूँ, इस साल पास हो गए और दरजे में अव्वल आ गए, तो तुम्हें दिमाग हो गया है।'
उन्होंने इतिहास में रावण, शैतान और शाहेरूम के उदाहरण देकर घमंड के दुष्परिणाम समझाए।
उन्होंने उसकी सफलता को 'अंधे के हाथ बटेर लग जाना' बताया और आगे की पढ़ाई की कठिनाइयाँ गिनाईं।

उत्तर: गुल्ली-डंडा खेलकर लौटने पर भाई साहब ने कड़े शब्दों में डाँटा, रावण-शैतान के उदाहरण देकर घमंड से सावधान किया और उसकी सफलता को 'अंधे के हाथ बटेर' बताया।

प्रश्न 3

बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं?

हल

बड़े भाई साहब को घर में सबसे बड़ा होने के कारण छोटे भाई के सामने एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करना पड़ता था।
वे जानते थे कि अगर वे खुद बेराह चलेंगे तो छोटे भाई की रक्षा कैसे करेंगे।
यह उनका कर्तव्य था कि वे अपने को संयत रखें ताकि छोटे भाई को सही राह दिखा सकें।

उनका भी मन कनकौए उड़ाने, खेलकूद में भाग लेने और मेले-तमाशे देखने को ललचाता था, किंतु बड़े भाई का कर्तव्य निभाने के लिए उन्हें अपनी इच्छाएँ दबानी पड़ती थीं।

उत्तर: बड़े भाई साहब को छोटे भाई के सामने आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करने का कर्तव्य था; खुद बेराह चलते तो छोटे की रक्षा कैसे करते — इसीलिए वे मन की इच्छाएँ दबाते थे।

प्रश्न 4

बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों?

हल

बड़े भाई साहब छोटे भाई को मन लगाकर पढ़ाई करने की सलाह देते थे।
वे उसे बताते थे कि खेलकूद में समय न गँवाएँ, क्योंकि अंग्रेजी पढ़ना कोई हँसी-खेल नहीं है।
वे उसे समझाते थे कि महज इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज नहीं, असल चीज है बुद्धि का विकास।
वे इसलिए यह सलाह देते थे क्योंकि वे उम्र और अनुभव में बड़े थे और छोटे भाई का भला चाहते थे।
उन्हें चिंता थी कि छोटा भाई अपनी पोजीशन का ध्यान न रखे और दादा की गाढ़ी कमाई बरबाद हो।

उत्तर: बड़े भाई साहब छोटे भाई को खूब पढ़ने, खेलकूद से दूर रहने और बुद्धि का विकास करने की सलाह देते थे, क्योंकि वे उसका भला चाहते थे और छोटे की देख-रेख उनका कर्तव्य था।

प्रश्न 5

छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फ़ायदा उठाया?

हल

जब भाई साहब दूसरी बार फेल हुए और छोटा भाई अव्वल आया, तो भाई साहब बहुत नरम पड़ गए।
छोटे भाई ने इस नरम व्यवहार का अनुचित लाभ उठाया।
उसे यह धारणा हो गई कि उसकी तकदीर बलवान है और वह पढ़े या न पढ़े, पास हो ही जाएगा।
इसलिए भाई साहब के डर से जो थोड़ी-बहुत पढ़ाई करता था, वह भी बंद हो गई।
उसे कनकौए उड़ाने का शौक लग गया और सारा समय पतंगबाजी में बीतने लगा।

उत्तर: छोटे भाई ने भाई साहब की नरमी का यह फ़ायदा उठाया कि उसने पढ़ाई बिलकुल बंद कर दी और सारा समय कनकौए उड़ाने में लगाने लगा।

प्रश्नावली 8.3 — लिखित (ख) — 50-60 शब्दों में उत्तर

प्रश्न 1

बड़े भाई की डाँट-फटकार अगर न मिलती, तो क्या छोटा भाई कक्षा में अव्वल आता? अपने विचार प्रकट कीजिए।

हल

बड़े भाई साहब की डाँट-फटकार न मिलती, तो संभवतः छोटा भाई कक्षा में अव्वल नहीं आता।
भाई साहब की डाँट-फटकार ने उसके मन में एक डर और जिम्मेदारी का भाव बनाए रखा।
छोटे भाई ने खुद स्वीकार किया — 'शायद उनके उपदेशों का ही असर है कि मैं दनादन पास हो जाता हूँ।'
भाई साहब के उपदेशों ने उसे बिल्कुल पढ़ाई छोड़ने से रोका और न्यूनतम अध्ययन बनाए रखा।
दूसरे, जब भाई साहब नरम पड़े तो छोटे भाई ने पढ़ाई छोड़ दी — यह प्रमाण है कि अनुशासन का प्रभाव था।
अतः भाई साहब की कठोरता उसकी सफलता में परोक्ष रूप से सहायक थी।

उत्तर: भाई साहब की डाँट-फटकार न मिलती तो छोटा भाई शायद अव्वल न आता, क्योंकि उनके उपदेशों का प्रभाव उसे न्यूनतम पढ़ाई करने पर मजबूर करता था और जब वे नरम पड़े तो उसने पढ़ाई ही बंद कर दी।

प्रश्न 2

इस पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनके विचार से सहमत हैं?

हल

लेखक ने निम्न शिक्षा-पद्धतियों पर व्यंग्य किया है —
(1) रटंत विद्या — इतिहास में बादशाहों के नाम रटना, ज्यामिति में अक्षर-क्रम रटना, जहाँ 'अ ब ज' की जगह 'अ ज ब' लिखने पर सारे नंबर कट जाते हैं।
(2) बेसिर-पैर के विषय — जैसे ज्यामिति में 'यह लंब आधार से दुगुना होगा' — इसका व्यावहारिक जीवन में कोई उपयोग नहीं।
(3) निबंध का बोझ — 'समय की पाबंदी पर चार पन्नों में संक्षिप्त निबंध' — यह विरोधाभास है।
(4) परीक्षा में अव्वल आना = योग्यता — लेखक का मानना है कि 'असल चीज है बुद्धि का विकास', न कि अंक।
हम आंशिक रूप से सहमत हैं — रटंत शिक्षा और परीक्षा-केंद्रित पद्धति पर व्यंग्य उचित है, किंतु बुनियादी ज्ञान और अनुशासन भी आवश्यक हैं।

उत्तर: लेखक ने रटंत विद्या, बेसिर-पैर के विषयों, निबंध के अनावश्यक बोझ और 'परीक्षा पास = योग्यता' की धारणा पर व्यंग्य किया। यह विचार काफी हद तक उचित है — शिक्षा का लक्ष्य बुद्धि का विकास होना चाहिए।

प्रश्न 3

बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है?

हल

बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ किताबें पढ़ने से नहीं, दुनिया देखने से आती है।
उनका कहना था कि उनकी अम्माँ और दादा ने कोई ऊँची डिग्री नहीं ली, फिर भी उन्हें दुनिया का हमसे कहीं ज्यादा

अनुभव है।
जो व्यक्ति घर का हिसाब-किताब संभाल सकता है, बीमारी में सूझ-बूझ से काम कर सकता है, वह वास्तव में जीवन समझता है।
उन्होंने हेडमास्टर साहब का उदाहरण दिया जो आक्सफोर्ड के एम.ए. होने पर भी घर का प्रबंध नहीं कर पाते थे, जबकि उनकी बूढ़ी माँ घर सँभालती थी।
अतः जीवन का अनुभव, व्यावहारिक ज्ञान और बड़ों की संगति से जीवन की समझ आती है।

उत्तर: भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ किताबों से नहीं, दुनिया देखने और अनुभव से आती है। बड़ों का जीवन-अनुभव, घर का व्यावहारिक प्रबंधन — यही वास्तविक ज्ञान है।

प्रश्न 4

छोटे भाई के मन में बड़े भाई साहब के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई?

हल

कनकौआ लूटने के प्रसंग में जब भाई साहब ने छोटे भाई को पकड़ लिया, तब उन्होंने कहा — 'मैं कनकौए उड़ाने को मना नहीं करता। मेरा भी जी ललचाता है; लेकिन करूँ क्या, खुद बेराह चलूँ तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ?'
यह सुनकर छोटे भाई को एहसास हुआ कि भाई साहब अपनी खुशी का त्याग करके कर्तव्य निभा रहे हैं।
उसे सचमुच अपनी लघुता का अनुभव हुआ।
उसने देखा कि भाई साहब की डाँट-फटकार स्वार्थ के लिए नहीं बल्कि उसके हित के लिए है।
भाई साहब के त्याग और कर्तव्यनिष्ठा को देखकर छोटे भाई के मन में उनके प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई।

उत्तर: जब भाई साहब ने बताया कि वे अपना मन दबाकर कर्तव्य निभाते हैं — 'खुद बेराह चलूँ तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ' — तब छोटे भाई को उनके त्याग का बोध हुआ और मन में श्रद्धा जागी।

प्रश्न 5

बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए।

हल

बड़े भाई साहब की प्रमुख स्वभावगत विशेषताएँ —
(1) अध्ययनशील — वे हरदम किताब खोले बैठे रहते थे, रात-दिन परिश्रम करते थे।
(2) उपदेश-कला में निपुण — वे ऐसी-ऐसी लगती बातें कहते और सूक्ति-बाण चलाते थे कि छोटे भाई का जिगर टुकड़े-टुकड़े हो जाता।
(3) जिम्मेदार और कर्तव्यनिष्ठ — अपनी इच्छाएँ दबाकर छोटे भाई की देख-रेख करते थे।
(4) अनुभवी — उन्हें दुनिया और जिंदगी का अनुभव था, वे उसे व्यावहारिक ज्ञान देते थे।
(5) भावुक — जब वे दूसरी बार फेल हुए तो रो पड़े; अंत में छोटे भाई को गले से लगा लिया।
(6) सहज बुद्धि — उनकी सहज बुद्धि बड़ी तीव्र थी; छोटे भाई के रंग-ढंग से उसकी मनोदशा भाँप लेते थे।

उत्तर: बड़े भाई साहब अध्ययनशील, उपदेश-कुशल, कर्तव्यनिष्ठ, अनुभवी, भावुक और तीव्र बुद्धि वाले थे। वे कठोर दिखते हुए भी छोटे भाई के प्रति स्नेह और जिम्मेदारी से भरे थे।

प्रश्न 6

बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्त्वपूर्ण कहा है?

हल

बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव को किताबी ज्ञान से अधिक महत्त्वपूर्ण बताया।
उनका तर्क था — 'समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है।'
उन्होंने उदाहरण दिया — उनकी अम्माँ ने कोई डिग्री नहीं ली, दादा भी पाँचवीं-छठी तक पढ़े, पर उन्हें जीवन का ज्यादा अनुभव है और वे हमेशा हमें समझाने का अधिकार रखते हैं।
हेडमास्टर साहब आक्सफोर्ड के एम.ए. होने पर भी घर नहीं सँभाल पाते, जबकि उनकी बूढ़ी माँ घर को व्यवस्थित रखती हैं।
अतः जीवन का व्यावहारिक अनुभव मनुष्य को वास्तविक समझदारी देता है।

उत्तर: भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव को महत्त्वपूर्ण बताया, क्योंकि 'समझ किताबें पढ़ने से नहीं, दुनिया देखने से आती है' — अम्माँ-दादा और हेडमास्टर की माँ के उदाहरण से उन्होंने यही सिद्ध किया।

प्रश्न 7

बताइए पाठ के किन अंशों से पता चलता है कि — (क) छोटा भाई अपने भाई साहब का आदर करता है। (ख) भाई साहब को जिंदगी का अच्छा अनुभव है। (ग) भाई साहब के भीतर भी एक बच्चा है। (घ) भाई साहब छोटे भाई का भला चाहते हैं।

हल

(क) छोटा भाई भाई साहब का आदर करता है —
पाठ के अंत में जब भाई साहब ने थप्पड़ दिखाते हुए कहा 'तुम्हें मेरी बातें जहर लग रही हैं', तब छोटे भाई ने 'सजल आँखों से' कहा — 'हरगिज नहीं। आप जो कुछ फ़रमा रहे हैं, वह बिलकुल सच है और आपको उसके कहने का अधिकार है।'
इसके अलावा, वह भाई साहब की नजर बचाकर कनकौए उड़ाता था, अर्थात् उनके अनादर की हिम्मत नहीं करता था।
(ख) भाई साहब को जिंदगी का अच्छा अनुभव है —
उन्होंने हेडमास्टर साहब का उदाहरण दिया जो आक्सफोर्ड के एम.ए. होने पर भी घर का प्रबंध नहीं कर पाते।
उन्होंने दादा के कुटुम्ब-पालन और महीने भर के खर्च को व्यवस्थित करने का उदाहरण दिया।
(ग) भाई साहब के भीतर भी एक बच्चा है —
कहानी के अंत में जब कटा कनकौआ उनके ऊपर से गुजरा, तो भाई साहब ने भी उछलकर उसकी डोर पकड़ ली और बेतहाशा होस्टल की तरफ़ दौड़ पड़े।
उन्होंने स्वयं कहा था — 'मेरा भी जी ललचाता है।'
(घ) भाई साहब छोटे भाई का भला चाहते हैं —
उन्होंने कहा — 'खुद बेराह चलूँ तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ? यह कर्तव्य भी तो मेरे सिर है।'
वे अपनी इच्छाएँ दबाकर छोटे भाई की देख-रेख में लगे रहते थे।

उत्तर: (क) अंत में सजल आँखों से आदर स्वीकार करना और नजर बचाकर खेलना; (ख) हेडमास्टर व दादा के उदाहरण; (ग) कटा कनकौआ देखते ही खुद दौड़ पड़ना और 'मेरा भी जी ललचाता है'; (घ) 'खुद बेराह चलूँ तो तुम्हारी रक्षा कैसे करूँ' — कर्तव्य-बोध।

प्रश्नावली 8.4 — लिखित (ग) — आशय स्पष्ट कीजिए

प्रश्न 1

आशय स्पष्ट कीजिए — इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज नहीं, असल चीज है बुद्धि का विकास।

हल

यह पंक्ति बड़े भाई साहब की है जो छोटे भाई को समझाते हुए कहते हैं।
आशय — केवल परीक्षा में पास हो जाना या अच्छे नंबर ले आना वास्तविक शिक्षा का प्रमाण नहीं है।
असली शिक्षा वह है जो व्यक्ति की बुद्धि, विवेक और सोचने-समझने की शक्ति का विकास करे।
जो व्यक्ति बुद्धि से विकसित है, वही जीवन की चुनौतियों का सामना कर सकता है।
लेखक यहाँ रटंत परीक्षा-पद्धति की आलोचना कर रहे हैं जहाँ छात्र बिना समझे रट लेते हैं और पास हो जाते हैं।
बुद्धि का विकास — यानी विषय का सही अर्थ और प्रयोग समझना — ही वास्तविक शिक्षा है।

उत्तर: परीक्षा पास करना या अंक लाना शिक्षा की कसौटी नहीं है; असली शिक्षा वह है जो बुद्धि, विवेक और जीवन-समझ का विकास करे। रटंत पढ़ाई से नहीं, समझ से ज्ञान मिलता है।

प्रश्न 2

आशय स्पष्ट कीजिए — फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

हल

यह पंक्ति छोटे भाई (कथा-नायक) के मन की स्थिति प्रकट करती है।
आशय — जिस प्रकार मनुष्य को पता है कि मृत्यु अटल है और विपत्ति आ सकती है, फिर भी वह सांसारिक मोह-माया में बँधा रहता है और उसे नहीं छोड़ पाता —
उसी तरह छोटे भाई को पता है कि भाई साहब डाँटेंगे, फटकारेंगे, और यह उचित भी है, फिर भी वह खेल-कूद को नहीं छोड़ पाता।
यह मानव-स्वभाव की कमजोरी और बचपन के स्वाभाविक आकर्षण को दर्शाता है।
खेलकूद का आकर्षण इतना प्रबल था कि भाई साहब की डाँट-फटकार भी उसे रोक नहीं पाती थी।

उत्तर: जैसे मृत्यु जानते हुए भी आदमी मोह-माया नहीं छोड़ता, वैसे ही छोटा भाई भाई साहब की फटकार जानते हुए भी खेलकूद नहीं छोड़ पाता था — बचपन का यह स्वाभाविक आकर्षण उस पर हावी था।

प्रश्न 3

आशय स्पष्ट कीजिए — बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने?

हल

यह उक्ति बड़े भाई साहब के अपने धीमे अध्ययन के बारे में कथावाचक की टिप्पणी के संदर्भ में है।
आशय — जिस प्रकार यदि किसी मकान (इमारत) की नींव (बुनियाद) कमजोर हो तो वह मकान टिकाऊ नहीं रह सकता —

उसी प्रकार यदि शिक्षा की बुनियाद, अर्थात् प्रारंभिक ज्ञान और समझ, मजबूत न हो तो आगे की पढ़ाई और जीवन का भवन भी मजबूत नहीं बन सकता।

भाई साहब इसीलिए एक-एक कक्षा में दो-तीन साल लगाते थे — वे चाहते थे कि नींव पक्की हो।

लेखक ने यहाँ शिक्षा की मजबूत आधारशिला के महत्त्व को स्थापत्य के प्रतीक से समझाया है।

उत्तर: जैसे कमजोर नींव पर मजबूत इमारत नहीं बनती, वैसे ही शिक्षा की बुनियाद पक्की न हो तो आगे का ज्ञान-भवन भी टिकाऊ नहीं होगा। भाई साहब इसीलिए हर कक्षा में अधिक समय लगाते थे।

प्रश्न 4

आशय स्पष्ट कीजिए — आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला आ रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो।

हल

यह पंक्तियाँ उस दृश्य का वर्णन करती हैं जब छोटा भाई एक कटे हुए कनकौए (पतंग) को लूटने के लिए बेतहाशा दौड़ रहा था।

आशय — उसकी आँखें आकाश में उड़ते कनकौए पर लगी थीं।

कनकौआ धीरे-धीरे, झूमते-झूमते, नीचे उतर रहा था।

लेखक ने उस पतंग की तुलना एक आत्मा से की है जो स्वर्ग से विरक्त (उदास/अनिच्छुक) मन से नए संस्कार ग्रहण करने के लिए पृथ्वी पर उतर रही हो।

यह पंक्ति बाल-मन के खेल-प्रेम और कल्पनाशीलता को काव्यात्मक भाषा में चित्रित करती है।

कनकौए का 'पतन की ओर झूमना' और 'विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करना' — ये दोनों बिम्ब उस क्षण की स्वप्निल और रोमांचक स्थिति को व्यक्त करते हैं।

उत्तर: आसमान में धीरे-धीरे झूमता हुआ गिरता कनकौआ लेखक को किसी विरक्त आत्मा जैसा लगा जो स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आ रही हो। यह काव्यात्मक बिम्ब बाल-मन के रोमांच और कल्पनाशीलता को दर्शाता है।

प्रश्नावली 8.5 — भाषा अध्ययन — पर्यायवाची शब्द

प्रश्न 1

निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए — नसीहत, रोष, आजादी, राजा, ताज्जुब

हल

नसीहत — सलाह, उपदेश
रोष — क्रोध, कोप
आजादी — स्वतंत्रता, स्वाधीनता
राजा — नृप, महीप
ताज्जुब — आश्चर्य, विस्मय

उत्तर: नसीहत = सलाह/उपदेश; रोष = क्रोध/कोप; आजादी = स्वतंत्रता/स्वाधीनता; राजा = नृप/महीप; ताज्जुब = आश्चर्य/विस्मय

प्रश्नावली 8.6 — भाषा अध्ययन — मुहावरों का वाक्य-प्रयोग

प्रश्न 1

निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए — सिर पर नंगी तलवार लटकना, आड़े हाथों लेना, अंधे के हाथ बटेर लगना, लोहे के चने चबाना, दाँतों पसीना आना, ऐरा-गैरा नत्थू खैरा

हल

सिर पर नंगी तलवार लटकना (हर समय खतरा या भय बना रहना) — परीक्षा के दिनों में विद्यार्थियों के सिर पर नंगी तलवार लटकती है।
आड़े हाथों लेना (कड़ी आलोचना या डाँट लगाना) — जब बेटे ने झूठ बोला, तो पिताजी ने उसे आड़े हाथों लिया।
अंधे के हाथ बटेर लगना (बिना परिश्रम के सफलता मिलना) — उसे बिना मेहनत के पुरस्कार मिल गया, यह तो अंधे के हाथ बटेर लगना ही है।
लोहे के चने चबाना (बहुत कठिन काम करना) — आईएएस परीक्षा पास करना लोहे के चने चबाने के समान है।
दाँतों पसीना आना (बहुत कठिनाई होना) — यह गणित का प्रश्न हल करते-करते दाँतों पसीना आ गया।
ऐरा-गैरा नत्थू खैरा (साधारण या तुच्छ व्यक्ति) — इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए ऐरा-गैरा नत्थू खैरा नहीं, बल्कि विशेष प्रतिभाशाली व्यक्ति को ही चुना जाता है।

उत्तर: सिर पर नंगी तलवार लटकना = निरंतर भय; आड़े हाथों लेना = कड़ी डाँट; अंधे के हाथ बटेर लगना = बिना परिश्रम सफलता; लोहे के चने चबाना = अत्यंत कठिन कार्य; दाँतों पसीना आना = बहुत कठिनाई; ऐरा-गैरा नत्थू खैरा = साधारण व्यक्ति।

प्रश्नावली 8.7 — भाषा अध्ययन — तत्सम/तद्भव/देशज/आगत शब्द वर्गीकरण

प्रश्न 1

निम्नलिखित तत्सम, तद्भव, देशी, आगत शब्दों को दिए गए उदाहरणों के आधार पर छाँटकर लिखिए। उदाहरण — तत्सम: जन्मसिद्ध; तद्भव: आँख; देशज: दाल-भात; आगत (अंग्रेजी): पोजीशन; आगत (उर्दू/अरबी-फ़ारसी): फ़जीहत। दिए गए शब्द: तालीम, जल्दबाजी, पुख्ता, हाशिया, चेष्टा, जमात, हफ़्ता, सूक्तिबाण, जानलेवा, आँखफोड़, घुड़कियाँ, आधिपत्य, पन्ना, मेला-तमाशा, मसलन, स्पेशल, स्कीम, फटकार, प्रातःकाल, विद्वान, निपुण, भाई साहब, अवहेलना, टाइम-टेबिल

हल

तत्सम (संस्कृत मूल, अपरिवर्तित) — चेष्टा, सूक्तिबाण, आधिपत्य, प्रातःकाल, विद्वान, निपुण, अवहेलना।
तद्भव (संस्कृत से परिवर्तित) — घुड़कियाँ, पन्ना (< पर्ण), जानलेवा, आँखफोड़, मेला-तमाशा, फटकार।
आगत — अंग्रेज़ी: स्पेशल, स्कीम, टाइम-टेबिल।
आगत — उर्दू/अरबी-फ़ारसी: तालीम, पुख्ता, जमात, हफ़्ता, मसलन, हाशिया (अरबी), जल्दबाजी (फ़ारसी जल्द+बाज़ी)।

उत्तर: तत्सम: चेष्टा, सूक्तिबाण, आधिपत्य, प्रातःकाल, विद्वान, निपुण, अवहेलना। तद्भव: घुड़कियाँ, पन्ना, जानलेवा, आँखफोड़, मेला-तमाशा, फटकार। आगत (अंग्रेज़ी): स्पेशल, स्कीम, टाइम-टेबिल। आगत (उर्दू/अरबी-फ़ारसी): तालीम, पुख्ता, जमात, हफ़्ता, मसलन, हाशिया, जल्दबाजी।

प्रश्नावली 8.8 — भाषा अध्ययन — सकर्मक और अकर्मक क्रिया

प्रश्न 1

नीचे दिए वाक्यों में कौन-सी क्रिया है — सकर्मक या अकर्मक? लिखिए — (क) उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया। (ख) फिर चोरों-सा जीवन कटने लगा। (ग) शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा। (घ) मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। (ङ) समय की पाबंदी पर एक निबंध लिखो। (च) मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था।

हल

(क) उन्होंने वहीं हाथ पकड़ लिया। — सकर्मक क्रिया ('हाथ' कर्म है, पकड़ना क्रिया का कर्म है)
(ख) फिर चोरों-सा जीवन कटने लगा। — अकर्मक क्रिया (कर्म नहीं है, जीवन स्वयं कट रहा है)
(ग) शैतान का हाल भी पढ़ा ही होगा। — सकर्मक क्रिया ('हाल' कर्म है, पढ़ना क्रिया का कर्म है)
(घ) मैं यह लताड़ सुनकर आँसू बहाने लगता। — सकर्मक क्रिया ('आँसू' कर्म है, बहाना क्रिया का कर्म है)
(ङ) समय की पाबंदी पर एक निबंध लिखो। — सकर्मक क्रिया ('निबंध' कर्म है, लिखना क्रिया का कर्म है)
(च) मैं पीछे-पीछे दौड़ रहा था। — अकर्मक क्रिया (कर्म नहीं है, दौड़ना अकर्मक है)

उत्तर: (क) सकर्मक; (ख) अकर्मक; (ग) सकर्मक; (घ) सकर्मक; (ङ) सकर्मक; (च) अकर्मक

प्रश्नावली 8.9 — भाषा अध्ययन — 'इक' प्रत्यय

प्रश्न 1

'इक' प्रत्यय लगाकर शब्द बनाइए — विचार, इतिहास, संसार, दिन, नीति, प्रयोग, अधिकार

हल

विचार + इक = वैचारिक
इतिहास + इक = ऐतिहासिक
संसार + इक = सांसारिक
दिन + इक = दैनिक
नीति + इक = नैतिक
प्रयोग + इक = प्रायोगिक
अधिकार + इक = आधिकारिक

उत्तर: वैचारिक, ऐतिहासिक, सांसारिक, दैनिक, नैतिक, प्रायोगिक, आधिकारिक